

NEXT IAS

दैनिक संपादकीय विश्लेषण

विषय

भारत में नई औद्योगिक नीति की
आवश्यकता

www.nextias.com

सन्दर्भ

- हाल के वर्षों में, औद्योगिक नीति में पुनः रुचि दिखाई है - एक ऐसा विषय जो प्रायः सरकारी हस्तक्षेप और बाजार की शक्तियों के मध्यमार्ग पर है। भारत को विभिन्न अन्य देशों की तरह, औद्योगिक नीति के लिए एक नए दृष्टिकोण की आवश्यकता है - एक ऐसा दृष्टिकोण जो निरंतर आर्थिक विकास को सुगम बना सके और देश को वैश्विक विनिर्माण केंद्र में परिवर्तित कर सके।

भारत की ऐतिहासिक औद्योगिक नीतियाँ

- लाइसेंस-परमिट राज युग: स्वतंत्रता के बाद, भारत की औद्योगिक नीति की विशेषता थी जिसे 'लाइसेंस-परमिट राज' के नाम से जाना जाता था। 1951 के उद्योग (विकास और विनियमन) अधिनियम ने प्रत्येक औद्योगिक निर्णय के लिए सरकार की स्वीकृति अनिवार्य कर दी, जिसके परिणामस्वरूप अत्यधिक नौकरशाही उत्पन्न हो गई। 1969 के एकाधिकार और प्रतिबंधात्मक व्यापार व्यवहार (MRTP) अधिनियम तथा 1973 के विदेशी मुद्रा विनियमन अधिनियम (FERA) ने विकास को अधिक प्रतिबंधित कर दिया और भारतीय उद्योगों को वैश्विक प्रतिस्पर्धा से अलग-थलग कर दिया।
 - दुर्भाग्यवश, इन नीतियों ने नवाचार को बाधित किया और प्रगति में बाधा उत्पन्न की।
- दूसरी ओर, अहस्तक्षेप दृष्टिकोण ने बाजार की विफलताओं तथा सार्वजनिक वस्तुओं के प्रावधान को संबोधित करने में अंतराल छोड़ दिया, जिसके परिणामस्वरूप अकुशलता उत्पन्न हुई और नवाचार बाधित हुआ।

उदारीकरण की ओर परिवर्तन

- 1980 के दशक में उदारीकरण की दिशा में परिवर्तन आया और 1991 के ऐतिहासिक सुधारों ने औद्योगिक लाइसेंसिंग और आयात शुल्क में कमी जैसी बाधाओं को समाप्त कर दिया।
 - इन परिवर्तनों का उद्देश्य कार्यकुशलता को बढ़ाना तथा निजी निवेश को प्रोत्साहित करना था।
- हालाँकि, भारत के विनिर्माण क्षेत्र को अभी भी बुनियादी ढांचे, श्रम कानूनों और नियामक जटिलताओं से संबंधित चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है।

नई औद्योगिक नीति की आवश्यकता

- औद्योगिक नीतियों को नीतियों और सरकारी हस्तक्षेपों के रूप में अवधारणाबद्ध किया जाता है, जो विशेष रूप से पूर्व निर्धारित सार्वजनिक उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए आर्थिक गतिविधियों की संरचना को परिवर्तित करने के लिए डिज़ाइन किए गए हैं।
- इन उद्देश्यों में सामान्यतः नवाचार को बढ़ाना, उत्पादकता में वृद्धि करना और आर्थिक विकास को बढ़ावा देना सम्मिलित है।
- हालाँकि, वे जलवायु परिवर्तन को सुविधाजनक बनाने, श्रम बाजार के परिणामों में सुधार, क्षेत्रीय असमानताओं को कम करने और निर्यात क्षमता का विस्तार करने जैसे उद्देश्यों तक भी विस्तारित हो सकते हैं।

- औद्योगिक नीति की एक परिभाषित विशेषता इसकी अंतर्निहित चयनात्मकता है, जिसमें नीति निर्माता आवंटन विवेक का प्रयोग करते हैं - संरचनात्मक परिवर्तन को प्रेरित करने के लिए कुछ क्षेत्रों या उद्योगों को रणनीतिक रूप से दूसरों पर प्राथमिकता देते हैं, हालांकि इस निहित समझौते के साथ कि कुछ क्षेत्रों को प्राथमिकता से हटाया जा सकता है।

औद्योगिक नीति की भूमिका

- **रणनीतिक हस्तक्षेप:** औद्योगिक नीतियाँ उद्देश्यपूर्ण होनी चाहिए। सरकारें बाजार की विफलताओं को ठीक करने, नवाचार को बढ़ावा देने और संसाधन आवंटन को निर्देशित करने के लिए रणनीतिक रूप से हस्तक्षेप कर सकती हैं।
- **संतुलन अधिनियम:** यह सही जगह खोजने के बारे में है - अक्षमताओं को संबोधित करने के लिए पर्याप्त विनियमन लेकिन इतना भी नहीं कि यह विकास को बाधित करे। आर्थिक प्रगति का त्याग नहीं किया जाना चाहिए।
- **सार्वजनिक उद्देश्य:** औद्योगिक नीतियाँ विशिष्ट क्षेत्रों, जैसे कि ऑटोमेकर, ऊर्जा कंपनियों या सेमीकंडक्टर निर्माताओं को लक्षित कर सकती हैं। ये नीतियाँ नई लागतों में वृद्धि हो सकती हैं या अनुसंधान एवं विकास और विनिर्माण निवेश के लिए प्रोत्साहन प्रदान कर सकती हैं।

नई औद्योगिक नीति की मुख्य विशेषताएं

- **मेक इन इंडिया:** इस नीति का उद्देश्य घरेलू उत्पादन को बढ़ावा देकर और विदेशी निवेश को आकर्षित करके भारत को विनिर्माण केंद्र में परिवर्तन करना है। यह उद्योगों को देश के अंदर विनिर्माण इकाइयाँ स्थापित करने के लिए प्रोत्साहित करता है।
- **स्मार्ट प्रौद्योगिकियाँ:** नई नीति में इंटरनेट ऑफ़ थिंग्स (IoT), आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) और रोबोटिक्स जैसी आधुनिक प्रौद्योगिकियाँ सम्मिलित हैं। ये प्रौद्योगिकियाँ विनिर्माण में उत्पादकता और प्रतिस्पर्धात्मकता को बढ़ाती हैं।
- **व्यापार करने में आसानी:** विनियामक प्रक्रियाओं को सरल बनाना और नौकरशाही बाधाओं को कम करना आवश्यक घटक हैं। अनुमोदन और लाइसेंस को सुव्यवस्थित करने से अधिक निवेश आकर्षित हो सकता है।
- **क्षेत्रीय मिशन:** सेमीकंडक्टर मिशन और गति शक्ति जैसी पहल विशिष्ट क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करती हैं, विकास और नवाचार को बढ़ावा देती हैं।

संबंधित चिंताएं

- **वैश्विक रुझान और बदलाव:** विश्व भर में, तकनीकी व्यवधान, आर्थिक ठहराव और भू-राजनीतिक प्रतिस्पर्धा के कारण बाजार-संचालित दृष्टिकोणों पर पुनर्विचार हो रहा है।

- **चीन का उदय:** चीन में तेजी से औद्योगिकीकरण से प्रशंसा और चिंता दोनों उत्पन्न हुई है। जैसे-जैसे यह वैश्विक विनिर्माण महाशक्ति बनता जा रहा है, अन्य देश अपनी रणनीतियों का पुनर्मूल्यांकन कर रहे हैं।
- **तकनीकी परिवर्तन:** स्वचालन, डिजिटलीकरण और उद्योग 4.0 सरकार की भागीदारी की आवश्यकता को रेखांकित करते हैं। औद्योगिक नीतियाँ आर्थिक गतिविधियों को आकार दे सकती हैं, नवाचार में वृद्धि कर सकती हैं और उत्पादकता को बढ़ावा दे सकती हैं।
- **कमज़ोर विनिर्माण आधार:** विश्व भर के देश मानते हैं कि निरंतर आर्थिक विकास के लिए एक मजबूत विनिर्माण क्षेत्र महत्वपूर्ण है। किसी भी प्रमुख अर्थव्यवस्था ने मजबूत विनिर्माण आधार के बिना गरीबी में कमी या दीर्घकालिक समृद्धि प्राप्त नहीं की है।
 - भारत की हालिया विनिर्माण पहल, जिसमें 'मेक इन इंडिया' जैसी पहल सम्मिलित हैं, वैश्विक रुझानों के अनुरूप है।
 - हालांकि उत्पादन से जुड़ी प्रोत्साहन (PLI) योजना को प्रायः एक औद्योगिक नीति के रूप में देखा जाता है, लेकिन यह मुख्य रूप से विशिष्ट क्षेत्रों में विनिर्माण को बढ़ावा देने के लिए वित्तीय प्रोत्साहन प्रदान करती है और भारत को वैश्विक विनिर्माण केंद्र में बदलने के लिए आवश्यक व्यापक संरचनात्मक चुनौतियों का पूरी तरह से समाधान नहीं करती है।
- **विनिर्माण क्षेत्र में रोजगार में गिरावट:** उन्नत अर्थव्यवस्थाएं इस चुनौती से गुजर रही हैं। वे प्रतिस्पर्धा बनाए रखने और रोजगार सृजन के उपाय खोज रहे हैं।
- **थैथी औद्योगिक क्रांति के सामने आने वाली चुनौतियाँ:** भारत की नई औद्योगिक नीति चौथी औद्योगिक क्रांति द्वारा उत्पन्न चुनौतियों और अवसरों को स्वीकार करती है।
 - इसका उद्देश्य कृत्रिम बुद्धिमत्ता, ब्लॉकचेन और ड्रोन जैसी उभरती प्रौद्योगिकियों में भारत को वैश्विक नेता के रूप में स्थापित करना है।
 - नीति में व्यापार करने में सुलभता, उत्पादन से जुड़े प्रोत्साहन और क्षेत्रीय मिशनों पर बल दिया गया है। डिजिटल तकनीक का लाभ प्राप्त कर भारत का लक्ष्य वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला में वृद्धि करना है।

क्या आप वाशिंगटन सहमति के बारे में जानते हैं?

- यह आर्थिक नीति उपायों के एक समूह के रूप में उभरा, जिसे मुख्य रूप से वाशिंगटन, डी.सी. स्थित संस्थानों द्वारा प्रोत्साहित किया गया, जिसमें अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF), विश्व बैंक और संयुक्त राज्य अमेरिका का ट्रेजरी विभाग सम्मिलित है।
- इसे पहली बार 1989 में अर्थशास्त्री जॉन विलियमसन द्वारा प्रस्तुत किया गया था और दस व्यापक नीति सिफारिशें (सर्वसम्मति नीतियों का दशांश) रखी गई थीं, जो इस "मानक" सुधार पैकेज का गठन करती थीं, जो संकटग्रस्त विकासशील देशों के लिए थीं, जिनका उद्देश्य उनकी आर्थिक सुधार और विकास को निर्देशित करना था।

इसमें सम्मिलित है:

1. **राजकोषीय नीति अनुशासन:** अपने सकल घरेलू उत्पाद के सापेक्ष राजकोषीय घाटे को नियंत्रण में रखें।
2. **सार्वजनिक व्यय को पुनर्निर्देशित करें:** अव्यवस्थित सब्सिडी में सुधार करें और प्राथमिक शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा और बुनियादी ढांचे जैसी आवश्यक सेवाओं पर ध्यान केंद्रित करें।
3. **व्यापार उदारीकरण:** अपने बाज़ार खोलें, वैश्विक व्यापार को अपनाएँ और उन वस्तुओं को प्रवाहित होने दें।
4. **निजीकरण:** राज्य के स्वामित्व वाले उद्यमों का विक्रय कर दें और निजी हाथों को उनका प्रबंधन करने दें।
5. **वित्तीय उदारीकरण:** अपने वित्तीय बाजारों को मुक्त करें - पूंजी प्रवाह को बढ़ने दें, लेकिन स्थिरता पर नियंत्रण रखें।
6. **मौद्रिक नीति:** मुद्रास्फीति को नियंत्रित करें, अपनी मुद्रा को स्थिर करें और धन की आपूर्ति को नियंत्रण में रखें।

निष्कर्ष और आगे की राह

- भारत की औद्योगिक नीति अब नौकरशाही के चक्रव्यूह में नहीं फंसी है। इसके बजाय, यह एक संतुलित दृष्टिकोण की खोज करती है - बाजार की विफलताओं को ठीक करने के लिए पर्याप्त विनियामक प्रोत्साहन और व्यवसायों को पनपने की अनुमति देना।
- जैसे-जैसे भारत आर्थिक परिवर्तन की ओर अपनी यात्रा जारी रखता है, एक गतिशील और दूरदर्शी औद्योगिक नीति महत्वपूर्ण बनी हुई है।
- एक अच्छी तरह से तैयार की गई औद्योगिक नीति - जो व्यावहारिकता और महत्वाकांक्षा को संतुलित करती है - भारत को आगे बढ़ा सकती है।

Source: BL**दैनिक मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न**

प्रश्न. बदलते वैश्विक आर्थिक परिदृश्य, तकनीकी प्रगति और वैश्विक विनिर्माण महाशक्ति बनने की भारत की आकांक्षाओं को देखते हुए, एक नई औद्योगिक नीति की आवश्यकता का आलोचनात्मक मूल्यांकन करें।